ايـاتها ٣٥ ‏ ٤٦ سُوۡرَةُ الۡاَحۡقَافِ مَكِّيَّةٌ ٦٦ ‏ ركوعاتها ٤

सूरए अह्क़ाफ़ मक्किय्या है, इस में पेंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

حٰمٓ ۚ ﴿۱﴾ تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۲﴾ مَا خَلَقۡنَا

येह किताब[2] उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले की त़रफ़ से हम ने न बनाए

السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ وَ مَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर ह़क़ के साथ[3] और एक मुक़र्रर मीआ़द पर[4] और

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَمَّاۤ اُنۡذِرُوۡا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿۳﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ مَّا

काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए[5] मुंह फेरे हैं[6] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो

تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَرُوۡنِىۡ مَاذَا خَلَقُوۡا مِنَ الۡاَرۡضِ اَمۡ لَهُمۡ

तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[7] मुझे दिखाओ उन्हों ने ज़मीन का कौन सा ज़र्रा बनाया या

شِرۡكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ؕ اِيۡتُوۡنِىۡ بِكِتٰبٍ مِّنۡ قَبۡلِ هٰذَاۤ اَوۡ اَثٰرَةٍ مِّنۡ عِلۡمٍ

आस्मान में उन का कोई ह़िस्सा है मेरे पास लाओ इस से पहली कोई किताब[8] या कुछ बचा खुचा इ़ल्म[9]

اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۴﴾ وَمَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ يَّدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَنۡ

अगर तुम सच्चे हो[10] और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजे[11] जो

لَّا يَسۡتَجِيۡبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ وَهُمۡ عَنۡ دُعَآئِهِمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۵﴾ وَ

क़ियामत तक उस की न सुनें और उन्हें उन की पूजा की ख़बर तक नहीं[12] और

1 : सूरए अह्क़ाफ़ मक्किय्या है मगर बा'ज़ के नज़्दीक इस की चन्द आयतें मदनी हैं जैसे कि आयत "قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ" और आयत "فَاصۡبِرۡ كَمَا صَبَرَ" और तीन[3] आयतें وَوَصَّيۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَيۡهِ । इस सूरत में चार रुकूअ़ और पेंतीस आयतें और छ[6] सो चवालीस कलिमे और दो हज़ार पांच सो पचानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी कुरआन शरीफ़ 3 : कि हमारी कुदरत व वह़्दानिय्यत पर दलालत करें 4 : वोह मुक़र्रर मीआ़द रोज़े क़ियामत है जिस के आ जाने पर आस्मान व ज़मीन फ़ना हो जाएंगे। 5 : उस चीज़ से मुराद या अ़ज़ाब है या रोज़े क़ियामत की वह़्शत या कुरआने पाक जो बअ़्स व ह़िसाब का ख़ौफ़ दिलाता है। 6 : कि उस पर ईमान नहीं लाते। 7 : या'नी बुत जिन्हें मा'बूद ठहराते हो। 8 : जो अल्लाह तआ़ला ने कुरआन से पहले उतारी हो, मुराद येह है कि येह किताब या'नी कुरआने मजीद तौह़ीद और इब्त़ाले शिर्क पर नात़िक़ है और जो किताब भी इस से पहले अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आई उस में येही बयान है, तुम कुतुबे इलाहिय्यह में से कोई एक किताब तो ऐसी ले आओ जिस में तुम्हारे दीन (बुत परस्ती) की शहादत हो। 9 : पहलों का 10 : अपने इस दा'वे में कि ख़ुदा का कोई शरीक है जिस की इ़बादत का उस ने तुम्हें हुक्म दिया है। 11 : या'नी बुतों को 12 : क्यूं कि वोह जमादे बेजान हैं।

اِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّ كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۶﴾ وَ

जब लोगों का हश्र होगा वोह उन के दुश्मन होंगे[13] और उन से मुन्किर हो जाएंगे[14] और

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ

जब उन पर[15] पढ़ी जाएं हमारी रोशन आयतें तो काफ़िर अपने पास आए हुए हक़ को[16] कहते हैं

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا

येह खुला जादू है[17] क्या कहते हैं इन्हों ने इसे जी से बनाया[18] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने इसे जी से बना लिया होगा

تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ

तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख़्तियार नहीं रखते[19] वोह ख़ूब जानता है जिन बातों में तुम मश्ग़ूल हो[20] और वोह काफ़ी है

شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۸﴾ قُلْ مَا كُنْتُ

मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है[21] तुम फ़रमाओ मैं कोई

بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا

अनोखा रसूल नहीं[22] और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या[23] मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं

13 : या'नी बुत अपने पुजारियों के। **14 :** और कहेंगे कि हम ने इन्हें अपनी इबादत की दा'वत नहीं दी, दर हक़ीक़त येह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार थे। **15 :** या'नी अहले मक्का पर **16 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये और अच्छी तरह सुने **17 :** कि इस के जादू होने में शुबा नहीं और इस से भी बदतर बात कहते हैं जिस का आगे ज़िक्र है। **18 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। **19 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ मैं दिल से बनाता और इस को अल्लाह तआ़ला का कलाम बताता तो वोह अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा होता और अल्लाह तबारक व तआ़ला ऐसे इफ़्तिरा करने वाले को जल्द उ़क़ूबत में गिरिफ़्तार करता है, तुम्हें तो येह क़ुदरत नहीं कि तुम उस की उ़क़ूबत से बचा सको या उस के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ कर सको तो किस तरह हो सकता है कि मैं तुम्हारी वज्ह से अल्लाह तआ़ला पर इफ़्तिरा करता। **20 :** और जो कुछ क़ुरआने पाक की निस्बत कहते हो। **21 :** या'नी अगर तुम कुफ़्र से तौबा कर के ईमान लाओ तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाएगा और तुम पर रह़मत करेगा। **22 :** मुझ से पहले भी रसूल आ चुके हैं तो तुम क्यूं नुबुव्वत का इन्कार करते हो ? **23 :** इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं, एक तो येह कि क़ियामत में जो मेरे और तुम्हारे साथ किया जाएगा वोह मुझे मा'लूम नहीं, येह मा'ना हों तो येह आयत मन्सूख़ है, मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो मुश्रिक ख़ुश हुए और कहने लगे कि लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक हमारा और मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का यक्सां ह़ाल है, उन्हें हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत नहीं, अगर येह क़ुरआन उन का अपना बनाया हुवा न होता तो उन का भेजने वाला उन्हें ज़रूर ख़बर देता कि उन के साथ क्या करेगा, तो अल्लाह तआ़ला ने आयत لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ नाज़िल फ़रमाई, सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! हुज़ूर को मुबारक हो आप को तो मा'लूम हो गया कि आप के साथ क्या किया जाएगा, येह इन्तिज़ार है कि हमारे साथ क्या करेगा, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई : ''لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ'' और येह आयत नाज़िल हुई ''بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا'' तो अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमा दिया कि हुज़ूर के साथ क्या करेगा और मोमिनीन के साथ क्या। **दूसरा क़ौल** आयत की तफ़्सीर में येह है कि आख़िरत का ह़ाल तो हुज़ूर को अपना भी मा'लूम है, मोमिनीन का भी, मुकज़्ज़िबीन का भी। मा'ना येह हैं कि दुन्या में क्या किया जाएगा ? येह मा'लूम नहीं। अगर येह मा'ना लिये जाएं तो भी आयत मन्सूख़ है, अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को येह भी बता दिया ''لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ'' और ''مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ'' बहर ह़ाल अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुज़ूर के साथ और हुज़ूर की उम्मत के साथ पेश आने वाले उमूर पर मुत्त़लअ़ फ़रमा दिया ख़्वाह वोह दुन्या के हों या आख़िरत के और अगर दिरायत ब मा'ना इदराक बिल क़ियास या'नी अ़क़्ल से जानने के मा'ना में लिया जाए तो मज़्मून और

www.dawateislami.net

مَا يُوْحٰۤى اِلَیَّ وَمَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ

जो मुझे वह्य होती है[24] और मैं नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर वोह क़ुरआन

عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ

अल्लाह के पास से हो और तुम ने उस का इन्कार किया और बनी इसराईल का एक गवाह[25] इस पर गवाही दे चुका[26]

ع ۱ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَقَالَ

तो वोह ईमान लाया और तुम ने तकब्बुर किया[27] बेशक अल्लाह राह नहीं देता ज़ालिमों को और

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَیْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَیْهِ ؕ وَاِذْ

काफ़िरों ने मुसल्मानों को कहा अगर इस में[28] कुछ भलाई होती तो येह[29] हम से आगे इस तक न पहुंच जाते[30] और जब

لَمْ یَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَیَقُوْلُوْنَ هٰذَاۤ اِفْكٌ قَدِیْمٌ ﴿۱۱﴾ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ

उन्हें उस की हिदायत न हुई तो अब[31] कहेंगे कि येह पुराना बोहतान है और इस से पहले मूसा की

مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِیًّا لِّیُنْذِرَ

किताब[32] है पेश्वा और मेहरबानी और येह किताब है तस्दीक़ फ़रमाती[33] अ़रबी ज़बान में कि ज़ालिमों

الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ

को डर सुनाए और नेकों को बिशारत बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है

ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ

फिर साबित क़दम रहे[34] न उन पर ख़ौफ़[35] न उन को ग़म[36] वोह जन्नत

الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ

वाले हैं हमेशा उस में रहेंगे उन के आ'माल का इन्आ़म और हम ने आदमी को हुक्म किया

भी ज़ियादा साफ़ है और आयत का इस के बा'द वाला जुम्ला इस का मुअय्यिद है। अ़ल्लामा नैशापूरी ने इस आयत के तह़्त फ़रमाया : "मैं" कि इस में नफ़ी अपनी ज़ात से जानने की है "مِنْ جِهَةِ الْوَحْیِ" जानने की नफ़ी नहीं। **24 :** या'नी मैं जो कुछ जानता हूं अल्लाह तआ़ला की ता'लीम से जानता हूं। **25 :** वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए और आप की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की शहादत दी। **26 :** कि वोह क़ुरआन अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है। **27 :** और ईमान से महरूम रहे तो इस का नतीजा क्या होना है ? **28 :** या'नी दीने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में **29 :** ग़रीब लोग **30 : शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि अगर दीने मुह़म्मदी ह़क़ होता तो फ़ुलां फ़ुलां इस को हम से पहले कैसे क़बूल कर लेते। **31 :** इ़नाद से क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत **32 :** तौरैत **33 :** पहली किताबों की **34 :** अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शरीअ़त पर दमे आख़िर तक **35 :** क़ियामत में **36 :** मौत के वक़्त।

www.dawateislami.net

بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَ

कि अपने मां बाप से भलाई करे उस की मां ने उसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी उस को तक्लीफ़ से और उसे उठाए फिरना और

فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ

उस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है[37] यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा[38] और चालीस बरस का हुवा[39]

قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की[40]

وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ

और मैं वोह काम करूं जो तुझे पसन्द आए[41] और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह़ (नेकी) रख[42] मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया[43]

وَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا

और मैं मुसल्मान हूं[44] येह हैं वोह जिन की नेकियां हम क़बूल

37 मस्अला : इस आयत से साबित होता है कि अक़ल मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह है क्यूं कि जब दूध छुड़ाने की मुद्दत दो साल हुई जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया "حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ" तो ह़म्ल के लिये छ[6] माह बाक़ी रहे, येही क़ौल है इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुह़म्मद رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰى का और ह़ज़रत इमाम साहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक इस आयत से रज़ाअ़ की मुद्दत ढाई साल साबित होती है। मस्अले की तफ़ासील मअ़ दलाइल कुतुबे उसूल में मज़्कूर हैं। **38 :** और अ़क़्ल व क़ुव्वत मुस्तह़कम हुई और येह बात तीस से चालीस साल तक की उ़म्र में ह़ासिल होती है। **39 :** येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप की उ़म्र सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दो साल कम थी, जब ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र अठ्ठारह साल की हुई तो आप ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सोह़बत इख़्तियार की, उस वक़्त हुज़ूर की उ़म्र शरीफ़ बीस साल की थी, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हमराही में ब ग़रज़े तिजारत मुल्के शाम का सफ़र किया, एक मन्ज़िल पर ठहरे वहां एक बेरी का दरख़्त था हुज़ूर सय्यिदे आ़लम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस के साए में तशरीफ़ फ़रमा हुए, क़रीब ही एक राहिब रहता था, ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के पास चले गए, राहिब ने आप से कहा : येह कौन साह़िब हैं जो इस बेरी के साए में जल्वा फ़रमा हैं ? ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) इब्ने अ़ब्दुल्लाह हैं, अ़ब्दुल मुत्तलिब के पोते। राहिब ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! येह नबी हैं, इस बेरी के साए में ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द से आज तक इन के सिवा कोई नहीं बैठा, येही नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान हैं। राहिब की येह बात ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में असर कर गई और नुबुव्वत का यक़ीन आप के दिल में जम गया और आप ने सोह़बत शरीफ़ की मुलाज़मत इख़्तियार की, सफ़रो ह़ज़र में आप से जुदा न होते। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को अपनी नुबुव्वत व रिसालत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया तो ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप पर ईमान लाए, उस वक़्त ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र अड़तीस साल की थी, जब ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र चालीस साल की हुई तो उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला से येह दुआ़ की : **40 :** कि हम सब को हिदायत फ़रमाई और इस्लाम से मुशर्रफ़ किया। ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद का नाम अबू क़ुह़ाफ़ा और वालिदा का नाम उम्मुल ख़ैर है। **41 :** आप की येह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हुस्ने अ़मल की वोह दौलत अ़त़ा फ़रमाई कि तमाम उम्मत के आ'माल आप के एक अ़मल के बराबर नहीं हो सकते, आप की नेकियों में से एक येह है कि नौ मोमिन जो ईमान की वज्ह से सख़्त ईज़ाओं और तक्लीफ़ों में मुब्तला थे उन को आप ने आज़ाद किया उन्हीं में से हैं ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप ने येह दुआ़ की : **42 :** येह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई **अल्लाह** तआ़ला ने आप की औलाद में सलाह़ रखी, आप की तमाम औलाद मोमिन है और उन में ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मर्तबा किस क़दर बुलन्दो बाला है कि तमाम औ़रतों पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़ज़ीलत दी है, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदैन भी मुसल्मान और आप के साह़िब ज़ादे मुह़म्मद और अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान और आप की साह़िब ज़ादियां ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते अस्मा और आप के पोते मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान येह सब मोमिन और सब शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़ सह़ाबा हैं, आप के सिवा कोई ऐसा नहीं है जिस को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल हो कि उस के वालिदैन भी सह़ाबी हों ख़ुद भी सह़ाबी औलाद भी सह़ाबी पोते भी सह़ाबी, चार पुश्तें शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़। **43 :** हर अम्र में जिस में तेरी रिज़ा हो। **44 :** दिल से भी और ज़बान से भी।

www.dawateislami.net

عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْۤ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ

फ़रमाएंगे[45] और उन की तक़्सीरों से दर गुज़र फ़रमाएंगे जन्नत वालों में सच्चा वा'दा

الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَاۤ اَتَعِدٰنِنِيْۤ

जो उन्हें दिया जाता था[46] और वोह जिस ने अपने मां बाप से कहा[47] उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे येह वा'दा देते हो

اَنْ اُخْرَجَ وَ قَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ

कि फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा हालां कि मुझ से पहले संगतें (क़ौमें) गुज़र चुकीं[48] और वोह दोनों[49] अल्लाह से फ़रियाद करते हैं

وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ

तेरी ख़राबी हो ईमान ला बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[50] तो कहता है येह तो नहीं मगर अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ

कहानियां येह वोह हैं जिन पर बात साबित हो चुकी[51] उन गुरौहों में जो इन से

مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَ لِكُلٍّ

पहले गुज़रे जिन्न और आदमी बेशक वोह ज़ियांकार (नुक़्सान वाले) थे और हर एक के लिये[52]

دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَ لِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ

अपने अपने अ़मल के दरजे हैं[53] और ताकि अल्लाह उन के काम उन्हें पूरे भर दे[54] और उन पर ज़ुल्म न होगा और

يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ

जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में

الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ

फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके[55] तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा

45 : इन पर सवाब देंगे। **46 :** दुन्या में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से। **47 :** मुराद इस से कोई ख़ास शख़्स नहीं है बल्कि हर काफ़िर जो बअ़्स का मुन्किर हो और वालिदैन का ना फ़रमान और उस के वालिदैन उस को दीने हक़ की दा'वत देते हों और वोह इन्कार करता हो। **48 :** उन में से कोई मर कर ज़िन्दा न हुवा। **49 :** मां बाप **50 :** मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाने का। **51 :** अ़ज़ाब की **52 :** मोमिन हो या काफ़िर **53 :** या'नी मनाज़िल व मरातिब हैं अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक रोज़े क़ियामत जन्नत के दरजात बुलन्द होते चले जाते हैं और जहन्नम के दरजात पस्त होते चले जाते हैं तो जिन के अ़मल अच्छे हों वोह जन्नत के ऊंचे दरजे में होंगे और जो कुफ़्रो मा'सियत में इन्तिहा को पहुंच गए हों वोह जहन्नम के सब से नीचे दरजे में होंगे। **54 :** या'नी मोमिनों और काफ़िरों को फ़रमां बरदारी और ना फ़रमानी की पूरी जज़ा दे। **55 :** या'नी लज़्ज़तो ऐश जो तुम्हें पाना था वोह सब दुन्या में तुम ने ख़त्म कर दिया अब तुम्हारे लिये आख़िरत में कुछ भी बाक़ी न रहा और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तय्यिबात से कुवाए जिस्मानिया और जवानी मुराद है और मा'ना येह हैं कि तुम ने अपनी जवानी और अपनी क़ुव्वतों को दुन्या के अन्दर कुफ़्रो मा'सियत में ख़र्च कर दिया।

www.dawateislami.net

تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ ع ٢
उस की कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उस की कि हुक्म उ़दूली करते थे[56] और याद करो
اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَ قَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ
आ़द के हमक़ौम[57] को जब उस ने उन को सर ज़मीने अह़्क़ाफ़ में डराया[58] और बेशक उस से पहले डर सुनाने वाले
يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
गुज़र चुके और उस के बा'द आए कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ
अन्देशा है बोले क्या तुम इस लिये आए कि हमें हमारे मा'बूदों से फेर दो तो हम पर लाओ[59] जिस का हमें वा'दा देते हो
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ٘ وَ اُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ
अगर तुम सच्चे हो[60] उस ने फ़रमाया[61] इस की ख़बर तो **अल्लाह** ही के पास है[62] मैं तो तुम्हें अपने रब के
اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ لٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا
पयाम पहुंचाता हूं हां हां मेरी दानिस्त में तुम निरे जाहिल लोग हो[63] फिर जब उन्हों ने अ़ज़ाब को देखा बादल की त़रह़
مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا
आस्मान के कनारे में फैला हुवा उन की वादियों की त़रफ़ आता[64] बोले येह बादल है कि हम पर बरसेगा[65] बल्कि येह तो वोह है
اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ ۙ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۭ
जिस की तुम जल्दी मचाते थे एक आंधी है जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब हर चीज़ को तबाह कर डालती है
بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
अपने रब के हुक्म से[66] तो सुब्ह़ रह गए कि नज़र न आते थे मगर उन के सूने (वीरान) मकान हम ऐसी ही सज़ा देते हैं

56 : इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्ह़ाब ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात तक हुज़ूर के अहले बैत ने कभी जव की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराए अक़्दस में आग न जलती थी चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी। ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है आप फ़रमाते थे कि मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐ़शो राह़त अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं। **57 :** ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام **58 :** शिर्क से और अह़्क़ाफ़ एक रेगिस्तानी वादी है जहां क़ौमे आ़द के लोग रहते थे। **59 :** वोह अ़ज़ाब **60 :** इस बात में कि अ़ज़ाब आने वाला है। **61 :** या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने **62 :** कि अ़ज़ाब कब आएगा **63 :** जो अ़ज़ाब में जल्दी करते हो और अ़ज़ाब को जानते नहीं हो कि क्या चीज़ है। **64 :** और मुद्दत दराज़ से उन की सर ज़मीन में बारिश न हुई थी, इस काले बादल को देख कर ख़ुश हुए। **65 :** ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : **66 :** चुनान्चे,

الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۲۵﴾ وَ لَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِیْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِیْهِ وَ جَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا

मुजरिमों को और बेशक हम ने उन्हें वोह मक्दूर दिये थे जो तुम को न दिये[67] और उन के लिये कान

وَّ اَبْصَارًا وَّ اَفْـٕدَةً ۖ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَ لَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَ لَاۤ

और आंख और दिल बनाए[68] तो उन के कान और आंखें और दिल कुछ

اَفْـٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا

काम न आए जब कि वोह **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने

كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾ ع وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَ ع ٣ ٢

जिस की हंसी बनाते थे और बेशक हम ने हलाक कर दीं[69] तुम्हारे आस पास की बस्तियां[70] और

صَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَلَوْ لَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا

त़रह त़रह की निशानियां लाए कि वोह बाज़ आएं[71] तो क्यूं न मदद की उन की[72] जिन को

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَ ذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَ مَا

उन्हों ने **अल्लाह** के सिवा कुर्ब ह़ासिल करने को ख़ुदा ठहरा रखा था[73] बल्कि वोह उन से गुम गए[74] और येह उन का

كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ اِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ

बोहतान व इफ़्तिरा है[75] और जब कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ कितने जिन्न फेरे[76] कान लगा कर

الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ

कुरआन सुनते फिर जब वहां ह़ाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो[77] फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की त़रफ़

उस आंधी के अ़ज़ाब ने उन के मर्दों, औ़रतों, छोटों, बड़ों को हलाक कर दिया, उन के अम्वाल आस्मान व ज़मीन के दरमियान उड़ते फिरते थे, चीज़ें पारा पारा हो गईं, ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने और अपने ऊपर ईमान लाने वालों के गिर्द एक ख़त़ खींच दिया था, हवा जब उस ख़त़ के अन्दर आती तो निहायत नर्म पाकीज़ा फ़रह़त अंगेज़ सर्द और वोही हवा क़ौम पर शदीद सख़्त मोहलिक और येह ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام का एक मो'जिज़ए अ़ज़ीमा था। **67 :** ऐ अहले मक्का ! वोह कुव्वतो माल और तूले उ़म्र में तुम से ज़ियादा थे। **68 :** ताकि दीन के काम में लाएं मगर उन्हों ने सिवाए दुन्या की त़लब के इन ख़ुदादाद ने'मतों से दीन का काम ही नहीं लिया। **69 :** ऐ कुरैश ! **70 :** मिस्ल समूद व आ़द व क़ौमे लूत़ के **71 :** कुफ़्रो तुग़यान से लेकिन वोह बाज़ न आए तो हम ने उन्हें उन के कुफ़्र के सबब हलाक कर दिया। **72 :** उन कुफ़्फ़ार की उन बुतों ने **73 :** और जिन की निस्बत येह कहा करते थे कि इन बुतों के पूजने से **अल्लाह** का कुर्ब ह़ासिल होता है। **74 :** और नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त काम न आए। **75 :** कि वोह बुतों को मा'बूद कहते हैं और बुत परस्ती को कुर्बे इलाही का ज़रीआ़ ठहराते हैं। **76 :** या'नी ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस वक़्त को याद कीजिये जब हम ने आप की त़रफ़ जिन्नों की एक जमाअ़त को भेजा, उस जमाअ़त की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि सात जिन्न थे जिन्हें रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन की क़ौम की त़रफ़ पयाम रसां बनाया। बा'ज़ रिवायात में आया है कि नव थे, उ़लमाए मुहक़्क़िक़ीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जिन्न सब के सब मुकल्लफ़ हैं। अब उन जिन्नों का ह़ाल इर्शाद होता है कि जब आप बत़्ने नख़्ला में मक्कए मुकर्रमा और त़ाइफ़ के दरमियान मक्कए मुकर्रमा को आते हुए अपने अस्ह़ाब के साथ नमाज़े फ़ज्र पढ़ रहे थे उस वक़्त जिन्न **77 :** ताकि अच्छी त़रह ह़ज़रत

www.dawateislami.net

مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى

डर सुनाते पलटे[78] बोले ऐ हमारी क़ौम हम ने एक किताब सुनी[79] कि मूसा के बा'द उतारी गई[80]

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ

ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मुनादी[81] की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे[82] और तुम्हें

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي

दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले और जो अल्लाह के मुनादी की बात न माने वोह ज़मीन में क़ाबू से निकल कर

الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

जाने वाला नहीं[83] और अल्लाह के सामने उस का कोई मददगार नहीं[84] वोह[85] खुली गुमराही में हैं

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ

क्या उन्हों ने[86] न जाना कि वोह अल्लाह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और उन के

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे) क्यूं नहीं बेशक वोह सब कुछ कर सकता है

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उन से फ़रमाया जाएगा क्या येह हक़ नहीं कहेंगे

بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

क्यूं नहीं हमारे रब की क़सम फ़रमाया जाएगा तो अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का[87] तो तुम सब्र करो

की क़िराअत सुन लें। **78 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ला कर हुज़ूर के हुक्म से अपनी क़ौम की त़रफ़ ईमान की दा'वत देने गए और उन्हें ईमान न लाने और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त से डराया। **79 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **80 :** अ़त़ा ने कहा चूं कि वोह जिन्न दीने यहूदिय्यत पर थे इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र किया और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब का नाम न लिया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब का नाम न लेने का बाइस येह है कि इस में सिर्फ़ मवाइ़ज़ हैं अह़काम बहुत ही कम हैं। **81 :** सय्यिदे आ़लम ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **82 :** जो इस्लाम से पहले हुए और जिन में ह़क़्क़ुल इ़बाद नहीं। **83 : अल्लाह** तआ़ला से कहीं भाग नहीं सकता और उस के अ़ज़ाब से बच नहीं सकता। **84 :** जो उसे अ़ज़ाब से बचा सके। **85 :** जो अल्लाह तआ़ला के मुनादी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बात न मानें **86 :** या'नी मुन्किरीने बअ़्स ने **87 :** जिस के तुम दुन्या में मुरतकिब हुए थे, इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से ख़ित़ाब फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ

जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया[88] और उन के लिये जल्दी न करो[89] गोया वोह जिस दिन

يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ

देखेंगे[90] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है[91] दुन्या में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर येह पहुंचाना है[92] तो कौन

ع ۴ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

हलाक किये जाएंगे मगर बे हुक्म लोग[93]

اٰياتها ۳۸ ﴿۴۷﴾ سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ ﴿۹۵﴾ رکوعاتها ۴

सूरए मुहम्मद मदनिय्या है, इस में अड़तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿۱﴾ وَ

जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** की राह से रोका[2] **अल्लाह** ने उन के अ़मल बरबाद किये[3] और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उस पर ईमान लाए जो मुह़म्मद पर उतारा गया[4] और वोही

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

उन के रब के पास से ह़क़ है **अल्लाह** ने उन की बुराइयां उतार दीं और उन की ह़ालतें संवार दीं[5] येह इस लिये

الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ

कि काफ़िर बात़िल के पैरव हुए और ईमान वालों ने ह़क़ की पैरवी की जो उन के रब की त़रफ़

88 : अपनी क़ौम की ईज़ा पर। **89 :** अ़ज़ाब त़लब करने में क्यूं कि अ़ज़ाब उन पर ज़रूर नाज़िल होने वाला है। **90 :** अ़ज़ाबे आख़िरत को **91 :** तो उस की दराज़ी और दवाम के सामने दुन्या में ठहरने की मुद्दत को बहुत क़लील समझेंगे और ख़याल करेंगे कि **92 :** या'नी येह कुरआन और वोह हिदायत व बय्यिनात जो इस में हैं येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से तब्लीग़ है। **93 :** जो ईमान व त़ाअ़त से ख़ारिज हैं। **1 :** सूरए मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़ और अड़तीस आयतें और पांच सो अठावन कलिमे, दो हज़ार चार सो पछत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी जो लोग खुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्हों ने इस्लाम से रोका **3 :** जो कुछ भी उन्हों ने किये हों ख़्वाह भूकों को खिलाया हो या असीरों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदे ह़राम या'नी ख़ानए का'बा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो सब बरबाद हुई, आख़िरत में इस का कुछ सवाब नहीं। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि मुराद येह है कि कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये जो मक्र सोचे थे और ह़ीले बनाए थे **अल्लाह** तआ़ला ने उन के वोह तमाम काम बात़िल कर दिये। **4 :** या'नी कुरआने पाक **5 :** उमूरे दीन में तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर और दुन्या में उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल

www.dawateislami.net